विद्या- भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग- चतुर्थ, दिनांक -25-08-2021

एन.सी.ईआर.टी. पर आधारित पाठ-10 शादी का सपना

सुप्रभात बच्चों,

ईरान के एक सुंदर नगर शीराज में एक लड़का रहता था। उसका नाम सादी था। जब वह बहुत छोटा था तब उसके पिता का देहांत हो गया। उसकी माँ ने कड़ी मेहनत करके उसका पालन पोषण किया।

आज ईद का चाँद दिखाई देने वाला था। सादी अपने आँखें आसमान में गड़ाए हुए था। वह चाँद देखने की कोशिश कर रहा था। अचानक उसे चाँद नजर आ गया। वह दौड़ता हुआ अपनी माँ के पास आकर बोला, "अम्मी–अम्मी, कल ईद होगी न! देखिए चाँद दिख गया!"

माँ ने मुसकराते हुए कहा, "हाँ, कल ईद होगी।"

सादी बोला, "अम्मी, मेरे नए जूते अभी तक नहीं आए। आपने कहा था कि ईद से पहले दिला देंगी।"

यह सुनकर माँ उदास हो गई। सादी के पिता की मृत्यु के बाद वे किसी–न–किसी तरह अपने लाडले बेटे की हर जरूरत को पूरी कर रही थीं। इस ईद

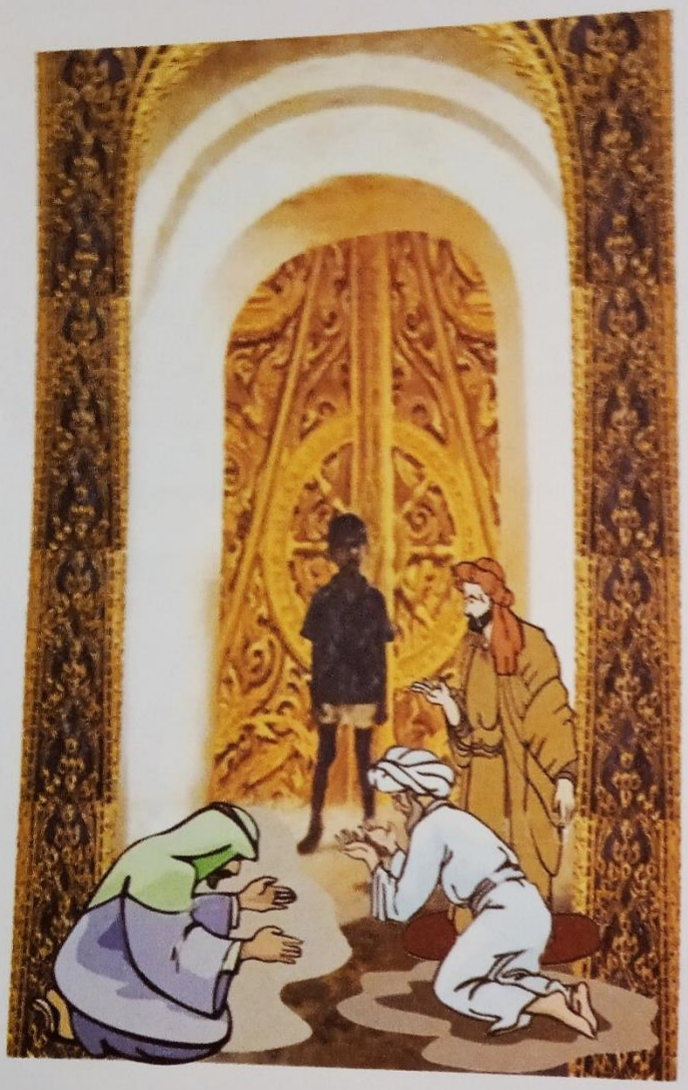

माँ की आँखों से आँसू टपक
उसको रोता देखकर सादी
"अम्मी, आप रोने लगीं! मुझे
चाहिए ऐसे जूते।"

लेकिन रात को बिस्तर पर लेट
सोचने लगा—हम गरीब क्यों हैं
ईदगाह पर मेरे दोस्त मेरा
उड़ाएँगे। ऐसा सोचते–सोचते
आँख लग गई।

उसने एक सपना देखा। स
अचानक प्रकाश की एक किरण
और हलकी–सी आहट हुई।
घबरा गया और डर के मारे उसे
छूटने लगा। उसने देखा, सामने
व्यक्ति खड़ा है। वह बोला, "आ
साथ!"

सादी उसके साथ चल पड़ा।
देर बार वे दोनों एक आलीशान इ
के सामने खड़े थे। उस व्यक्ति
इमारत की तरफ इशारा करके कहा, "मेरे प्यारे बच्चे, आगे बढ़ो और दरवाजा खो
अंदर जाओ।"

सादी ने दरवाजे को हाथ लगाया। दरवाजा अपने आप ही खुल गया। अंदर
व्यक्ति अपनी–अपनी बेबसी का रोना रो रहे थे। पहला व्यक्ति रो–रोकर कह रहा
"ऐ खुदा! मेरी सारी धन–दौलत ले ले, लेकिन मुझे आँखों की रोशनी दे दे।"

दूसरा आदमी कह रहा था, "ऐ खुदा! तूने मुझे दुनिया की हर चीज

गृहकार्य-

दिए, गए अध्ययन- सामग्री पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।